

सिफरी मासिक समाचार



नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 की हार्दिक शुभकामनाएँ। योग अपनाएँ, स्वस्थ जीवन पाएँ।

भारत में अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र आज पारिस्थितिक संरक्षण, ग्रामीण समृद्धि और सतत विकास का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है। सिफरी द्वारा नदियों, जलाशयों एवं आर्द्रभूमियों में संचालित वैज्ञानिक कार्यक्रम यह सिद्ध कर रहे हैं कि मत्स्य विकास केवल उत्पादन वृद्धि तक सीमित नहीं, बल्कि जैव विविधता संरक्षण, आजीविका सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। देशी मत्स्य प्रजातियों का संरक्षण, रिवर रैचिंग, पिंजरा एवं पेन मत्स्य पालन तथा कम उर्वरक उपयोग जैसी पहले जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

उत्तर 24 परगना की आर्द्रभूमियों में देशी मत्स्य प्रजातियों के पुनर्स्थापन से लेकर गंगा नदी में रिवर रैचिंग कार्यक्रमों तक, सिफरी के प्रयास जलीय जैव विविधता संरक्षण और मत्स्य संसाधनों की सतत उत्पादकता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। वैज्ञानिक मत्स्य बीज संवर्धन, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन तथा सामुदायिक भागीदारी जैसे उपाय पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ मछुआरा समुदायों की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बना रहे हैं।

ओडिशा के रिशिया जलाशय में प्राप्त सकारात्मक परिणाम विशेष रूप से प्रेरणादायक हैं। मत्स्य उत्पादन और आय में वृद्धि ने यह स्पष्ट किया है कि विज्ञान-आधारित हस्तक्षेप ग्रामीण परिवारों के जीवन में सम्मान, आर्थिक स्थिरता और नए अवसर ला सकते हैं। ऐसे प्रयास विकसित भारत @2047 की समावेशी विकास अवधारणा को सशक्त बनाने के साथ-साथ ब्लू इकोनॉमी में अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि संतुलन ही स्वास्थ्य, समृद्धि और स्थिरता का मूल आधार है। योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य का माध्यम नहीं, बल्कि मनुष्य, प्रकृति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने का जीवन-दर्शन भी है। जिस प्रकार योग शरीर, मन और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाकर समग्र कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है, उसी प्रकार सिफरी के वैज्ञानिक प्रयास जलीय पारिस्थितिकी, मत्स्य संसाधनों और मानव आजीविका के बीच संतुलित सह-अस्तित्व को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्यरत हैं। देशी मत्स्य प्रजातियों का संरक्षण, जल संसाधनों का सतत प्रबंधन तथा समुदाय-आधारित वैज्ञानिक हस्तक्षेप यह दर्शाते हैं कि विकास तभी सार्थक है जब वह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए वर्तमान और भावी पीढ़ियों दोनों के हितों की रक्षा करे। यही संतुलन सतत विकास, पर्यावरणीय सुरक्षा और समृद्ध समाज की आधारशिला है।

धन्यवाद।

(निदेशक)

जिला सुबरनपुर, ओडिशा के किसानों के बीच एकीकृत कृषि क्लस्टर विकास हेतु उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर जागरूकता कार्यक्रम



संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, विशेष रूप से संसाधन-आधारित ग्रामीण क्षेत्रों में सुदृढ़, जलवायु-स्मार्ट एवं टिकाऊ एकीकृत कृषि प्रणालियों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से उत्पन्न बढ़ती पारिस्थितिक एवं आर्थिक चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, दिनांक 7 मई, 2026 को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान में अंतर्राज्यीय एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम के अंतर्गत “एकीकृत कृषि क्लस्टर विकास हेतु उर्वरकों के संतुलित उपयोग” विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ओडिशा के सुबरनपुर जिले से आए 25 स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों एवं मिशन शक्ति कर्मियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृषि एवं मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरकों के वैज्ञानिक, विवेकपूर्ण एवं आवश्यकता-आधारित उपयोग के प्रति जागरूक करना था तथा साथ ही मृदा स्वास्थ्य, जल गुणवत्ता एवं दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता के संरक्षण पर बल देना था। कार्यक्रम के दौरान हुई चर्चा में यह रेखांकित किया गया कि रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित एवं अत्यधिक उपयोग न केवल मृदा क्षरण एवं पोषक तत्वों के असंतुलन को बढ़ाता है, बल्कि जलीय पारिस्थितिक तंत्रों में बहाव (रनऑफ) को भी तीव्र करता है, जिससे मछलियों के स्वास्थ्य, तालाब पारिस्थितिकी एवं समग्र कृषि स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इंटरैक्टिव तकनीकी सत्रों के दौरान डॉ. श्रीकांत सामंत, डॉ. अपर्णा राय, डॉ. पी. के. परिडा, डॉ. पी. जे. माझी तथा श्री मितेश रामटेके ने उर्वरकों के दुरुपयोग के दुष्परिणामों पर चर्चा की तथा कृषि प्रणालियों में पारिस्थितिक संतुलन पुनर्स्थापित करने के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन दृष्टिकोण अपनाने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि संतुलित उर्वरक उपयोग फसल एवं मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य, जल गुणवत्ता एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने चेतावनी दी कि उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पोषक तत्वों के बहाव, पारिस्थितिक क्षरण एवं जलीय कृषि प्रणालियों में तनाव को बढ़ाता है। मृदा एवं जल परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन की वकालत करते हुए उन्होंने किसानों को जैविक खाद, जैव उर्वरक, फसल अवशेष, तालाब की गाद तथा रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर आधारित एकीकृत एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, ताकि टिकाऊ एवं जलवायु-सहिष्णु कृषि को बढ़ावा दिया जा सके।



यह जागरूकता कार्यक्रम ओडिशा के सुबरनपुर जिले के सहभागी किसानों एवं मिशन शक्ति सदस्यों के ज्ञान, जागरूकता एवं निर्णय क्षमता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। संतुलित उर्वरक उपयोग एवं एकीकृत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देकर यह पहल उच्च फसल एवं मत्स्य उत्पादन, बेहतर मृदा एवं जल स्वास्थ्य, खेती की लागत में कमी, कृषि आय में वृद्धि तथा आजीविका सुरक्षा को सशक्त बनाने के साथ-साथ दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी।



संस्थान “स्टूडेंट रेडी” कार्यक्रम के अंतर्गत भावी मत्स्य पेशेवरों को संतुलित उर्वरक प्रबंधन के माध्यम से सतत जलीय कृषि पर जागरूक कार्यक्रम



सिफरी ने अपनी आउटरीच एवं “स्टूडेंट रेडी” पहल के अंतर्गत उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर जागरूकता तथा क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित कर सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन एवं पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि को बढ़ावा देने के प्रयासों को और सशक्त किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियों को सुदृढ़ करना, पारिस्थितिक स्थिरता को बढ़ावा देना तथा जलवायु-सहिष्णु जलीय कृषि दृष्टिकोणों के माध्यम से दीर्घकालिक मत्स्य उत्पादकता में वृद्धि करना था। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि वैज्ञानिक रूप से दक्ष एवं पर्यावरण के प्रति सजग मत्स्य उद्यमियों का विकास, नील क्रांति की गति को बनाए रखने तथा विकसित भारत @2047 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मृदा परीक्षण आधारित संतुलित उर्वरक उपयोग एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने, मृदा एवं जल स्वास्थ्य में सुधार करने तथा मत्स्य उत्पादकता की सतत वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने आगे कहा कि जलवायु-सहिष्णु एवं पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि पद्धतियाँ देश में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के दीर्घकालिक विकास, स्थिरता एवं लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य हैं।

कार्यक्रम में प्रभागाध्यक्ष डॉ. एस. सामंता, डॉ. आर. के. मान्ना, डॉ. एस. के. मान्ना, डॉ. ए. मुजद्दादी तथा डॉ. ए. के. बेरा ने विशेषज्ञ व्याख्यान प्रस्तुत किए, जिनमें उन्होंने मृदा स्वास्थ्य, जल गुणवत्ता, पोषक तत्व गतिशीलता एवं सतत मत्स्य उत्पादन प्रणालियों के बीच घनिष्ठ संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। “स्टूडेंट रेडी” कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित व्यावहारिक प्रदर्शन (हैंड्स-ऑन डेमोंस्ट्रेशन) के माध्यम से प्रतिभागियों को पर्यावरण-अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधन तकनीकों एवं सतत जलीय कृषि पद्धतियों का व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया गया।

इस पहल के अंतर्गत 25 विद्यार्थियों को सतत जलीय कृषि के महत्वपूर्ण पहलुओं के प्रति जागरूक किया गया, जिनमें उर्वरक का संतुलित उपयोग, मृदा एवं तालाब तल स्वास्थ्य का संरक्षण तथा यूरिया एवं डीएपी जैसे रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से उत्पन्न प्रतिकूल पारिस्थितिकी प्रभाव शामिल थे। कार्यक्रम में पर्यावरण-अनुकूल मत्स्य पालन, आजीविका सुरक्षा एवं जलीय



पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जैविक इनपुट, जैव उर्वरकों, वर्मी कम्पोस्टिंग एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियों के महत्व पर भी विशेष बल दिया गया।

इस पहल से वैज्ञानिक एवं पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देकर, उत्पादकता में वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा सतत विकास के प्रति प्रतिबद्ध मत्स्य उद्यमियों की नई पीढ़ी तैयार करने के माध्यम से सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने संभावना व्यक्त होती है।



हुगली जिले में सतत मत्स्य पालन हेतु मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन एवं संतुलित उर्वरक उपयोग पर दो दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम



वैज्ञानिक एवं संतुलित उर्वरक उपयोग अभियान के अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन एवं सतत मत्स्य पालन पर दो जागरूकता कार्यक्रमों का संयुक्त रूप से आयोजन सिफरी बैरकपुर तथा कृषि विज्ञान केंद्र (BCKV) हुगली द्वारा हुगली जिले के बलागढ़ ब्लॉक के बक्सगढ़ तथा चूचुड़ा में किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य मत्स्य किसानों एवं अन्य हितधारकों के बीच मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन तथा उर्वरक के संतुलित उपयोग के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना था, ताकि आवश्यकता-आधारित एवं पोषक तत्व प्रबंधन वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से जलीय कृषि उत्पादकता में सुधार, तालाब पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य का संरक्षण तथा दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

कार्यक्रम को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए डॉ. प्रदीप डे ने सतत मत्स्य पालन तथा मृदा एवं जल स्वास्थ्य बनाए रखने के





लिए वैज्ञानिक, स्थान-विशिष्ट एवं आवश्यकता-आधारित उर्वरक के संतुलित प्रबंधन पद्धतियों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कह कि पोषक संतुलित तत्व का प्रबंधन न केवल जलीय कृषि उत्पादकता को बढ़ाता है, बल्कि तालाब पारिस्थितिकी, जल गुणवत्ता एवं समग्र पर्यावरणीय स्थिरता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जलवायु परिवर्तनशीलता एवं प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण से उत्पन्न चुनौतियों का उल्लेख करते हुए डॉ. डे ने ऐसे सतत पोषक तत्व प्रबंधन दृष्टिकोणों की आवश्यकता पर बल दिया, जो दीर्घकालिक खाद्य, पोषण एवं आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने में सक्षम सुदृढ़ जलीय कृषि प्रणालियों के विकास में सहायक हों सके।

कार्यक्रम में संस्थान की MGMG टीम के सदस्य डॉ. अर्चन कांति दास के साथ कृषि विज्ञान केंद्र, हुगली के डॉ. नितार्ई मुडी तथा अन्य वैज्ञानिक एवं विषय विशेषज्ञों (SMS) ने मृदा परीक्षण, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन तथा रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक एवं अंधाधुंध उपयोग के दुष्परिणामों पर व्यावहारिक जानकारी साझा की। कार्यक्रम का एक प्रमुख पहलू कृषि एवं जलीय कृषि उत्पादकता बनाए रखने में मृदा स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी। विशेषज्ञों ने बताया कि स्वस्थ तालाब मृदा तथा जल गुणवत्ता बनाए रखने, प्राकृतिक उत्पादकता वृद्धि, मछलियों की स्वस्थ वृद्धि को समर्थन देने तथा जलीय कृषि प्रणालियों में समग्र लाभप्रदता सुधारने के लिए अत्यंत आवश्यक है। उर्वरक के असंतुलित एवं अवैज्ञानिक उपयोग से दूर रहकर वैज्ञानिक मूल्यांकन एवं स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाने पर बल दिया गया। साथ ही समय-समय पर मृदा परीक्षण, जैविक एवं अजैविक उर्वरकों के उचित चयन एवं उपयोग तथा स्थानीय कृषि-पारिस्थितिक परिस्थितियों के अनुरूप एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन दृष्टिकोणों के महत्व को भी समझाया गया। विशेषज्ञों ने कहा कि ऐसी पद्धतियाँ कृषि एवं मत्स्य क्षेत्रों में उत्पादन लागत कम करने, पर्यावरणीय क्षरण को न्यूनतम करने तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में अत्यंत सहायक हैं।

इन कार्यक्रमों में कुल 82 किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिनमें 52 पुरुष एवं 30 महिलाएँ शामिल थीं। प्रतिभागियों ने वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों के साथ फसल एवं जलीय कृषि प्रणालियों में संतुलित उर्वरक उपयोग तथा एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

इंटरैक्टिव सत्रों ने प्रभावी ज्ञान साझा करने एवं अनुभवात्मक शिक्षण द्वारा प्रतिभागियों को सतत पोषक तत्व एवं मृदा प्रबंधन पद्धतियों को बताया गया। कार्यक्रम का समापन किसानों की उत्साहपूर्ण सहभागिता एवं पर्यावरण-अनुकूल तथा वैज्ञानिक रूप से निर्देशित उर्वरक प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ, ताकि अधिक उत्पादक एवं सतत कृषि एवं जलीय कृषि भविष्य का निर्माण किया जा सके।

देशी मत्स्य प्रजातियों की पुनर्स्थापना के माध्यम से आर्द्रभूमि जैव विविधता एवं आजीविका का पुनर्जीवन : उत्तर 24 परगना में पेन में मछली पालन



आर्द्रभूमि विश्व के सबसे अधिक उत्पादक किन्तु संकटग्रस्त पारिस्थितिक तंत्रों में से एक हैं, जिन पर मत्स्य उत्पादन, जैव विविधता संरक्षण, पोषक तत्व चक्रण, जलवायु सहनशीलता तथा लाखों ग्रामीण परिवारों की आजीविका निर्भर करती हैं। किन्तु आवासीय क्षरण, अंधाधुंध मत्स्य दोहन, प्रदूषण, कृषि से होने वाले पोषक तत्वों के बहाव, जल-प्रणाली में परिवर्तन तथा जलवायु-जनित पारिस्थितिक दबावों के कारण आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्रों में देशी मत्स्य विविधता में चिंताजनक गिरावट देखी जा रही है। देशी मछली प्रजातियों की घटती संख्या जैव विविधता संरक्षण, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई है।

इन उभरती चुनौतियों के समाधान हेतु सिफरी बैरकपुर ने राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) के वित्तीय सहयोग से पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले की चामरादाहा एवं सिंद्रानी आर्द्रभूमि में छोटी देशी मछली प्रजाति *सिस्टोमस सरना* (*Systemus sarana*) के बीज को पालन-आधारित पालन का एक प्रदर्शन कार्यक्रम किया। इस पहल का उद्देश्य देशी मछलियों की संख्या में वृद्धि करना, सतत पालन-आधारित मत्स्य पालन को सुदृढ़ बनाने तथा आर्द्रभूमि संसाधन प्रबंधन में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना था।



इस पहल ने आर्द्रभूमि आधारित बीज उत्पादन एवं जैव विविधता पुनर्स्थापना के लिए पालन तकनीक की उपयुक्तता को प्रदर्शित किया। वैज्ञानिक रूप से विकसित पेन संरचनाओं के भीतर मछलियों को फ्राई अवस्था से उन्नत फिंगरलिंग एवं ईयरलिंग अवस्था तक पाला गया, जिससे आर्द्रभूमि संवर्धन हेतु गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज उपलब्ध कराया जा सका। कार्यक्रम ने यह दर्शाया कि पेन कल्चर एक व्यवहार्य, विस्तार योग्य एवं समुदाय-अनुकूल तकनीक है, जो देशी मछली प्रजातियों की घटती आबादी को पुनर्स्थापित



करने के साथ-साथ सतत मत्स्य विकास को भी प्रोत्साहित करती है।

कार्यक्रम के अंतर्गत फील्ड डे एवं हार्वेस्ट मेला का आयोजन किया गया, जिसमें पेन से प्राप्त मछलियों को खुले आर्द्रभूमि क्षेत्रों में छोड़ा गया, ताकि स्टॉक संवर्धन, पालन-आधारित मात्स्यिकी तथा देशी मत्स्य प्रजातियों की प्राकृतिक प्रजनन(ऑटो-रिक्रूटमेंट) को बढ़ावा मिल सके। साथ ही, कुछ मछलियों को पेन के भीतर ही रखा गया, ताकि पेन कल्चर प्रणाली के अंतर्गत इन-सीटू प्रजनन एवं भर्ती

की संभावनाओं का मूल्यांकन किया जा सके। इससे भावी आर्द्रभूमि मत्स्य प्रबंधन प्रणालियों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होने की संभावना है।

कृषि एवं आर्द्रभूमि स्वास्थ्य के बीच घनिष्ठ पारिस्थितिक संबंध को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम में संतुलित उर्वरक उपयोग पर एक जागरूकता अभियान भी शामिल किया गया। किसानों एवं हितधारकों को उर्वरकों के वैज्ञानिक एवं विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूक किया गया, ताकि पोषक तत्वों के बहाव, यूट्रोफिकेशन के जोखिम तथा आर्द्रभूमि जल गुणवत्ता हास को कम किया जा सके। इस पहल ने कृषि उत्पादकता एवं जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता बनाए रखने हेतु एकीकृत भूमि-जल प्रबंधन दृष्टिकोणों की आवश्यकता को दिखया।

जागरूकता कार्यक्रम 14 मई 2026 को चामरादाहा तथा 15 मई 2026 को सिंदरानी में आयोजित किए गए, जिनमें स्थानीय मछुआरों, किसानों एवं सामुदायिक हितधारकों ने सक्रिय भागीदारी की। यह सहभागिता सतत आर्द्रभूमि संरक्षण एवं प्रबंधन के प्रति बढ़ती जागरूकता और सामुदायिक स्वामित्व को दर्शाती है।

इन गतिविधियों का संचालन डॉ. लियानथुआमलुआइया एवं डॉ. सुमन कुमारी द्वारा सिफरी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे के मार्गदर्शन में किया गया। इस पहल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. डे ने कहा कि आर्द्रभूमियों में देशी मत्स्य विविधता की पुनर्स्थापना पारिस्थितिक स्थिरता, पोषण सुरक्षा एवं आर्द्रभूमि-आश्रित समुदायों की आजीविका सुदृढ़ता के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह पहल जलीय संसाधनों के सतत उपयोग के माध्यम से ब्लू इकोनॉमी के व्यापक लक्ष्यों को भी समर्थन प्रदान करती है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि पेन पालन जैसी समुदाय-आधारित पहल सतत मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ-साथ देशी जलीय जैव विविधता संरक्षण का प्रभावी माध्यम हैं। हालांकि, ऐसी पहलों को व्यापक स्तर पर लागू करने के लिए मत्स्य, कृषि, आर्द्रभूमि प्रबंधन एवं ब्लू इकोनॉमी नीतियों के बीच बेहतर समन्वय, सामुदायिक प्रबंधन तंत्र, देशी मत्स्य बीज उत्पादन, आवास पुनर्स्थापना तथा पारिस्थितिकी-आधारित मत्स्य प्रबंधन ढांचे को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

इस कार्यक्रम के सफलता यह दिखता है कि वैज्ञानिक मत्स्य हस्तक्षेप, सामुदायिक सहभागिता एवं पारिस्थितिक जागरूकता के समन्वय से देशी मत्स्य विविधता की पुनर्स्थापना एवं सतत आर्द्रभूमि प्रबंधन को प्रभावी रूप से बढ़ावा दिया जा सकता है। ऐसी पहलें सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन, जैव विविधता संरक्षण, जलवायु सहनशीलता एवं एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन से संबंधित राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं तथा देशी प्रजातियों के संरक्षण, आर्द्रभूमियों के बहु-क्षेत्रीय प्रबंधन एवं समुदाय-आधारित मत्स्य प्रबंधन प्रणालियों को सशक्त बनाने की नीति-बनाने के अवसरों को भी उजागर करती हैं।



संघर्ष से समृद्धि की ओर : सिफरी द्वारा ओडिशा के रिशिया जलाशय के आदिवासी मछुआरों में जागरूकता

ओडिशा के बालासोर जिले स्थित रिशिया जलाशय के आसपास रहने वाले निर्धन एवं आदिवासी मछुआरों के लिए पीढ़ियों से मत्स्य



पालन अनिश्चित उत्पादन एवं अस्थिर आय का माध्यम रहा है। इस क्षेत्र में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जो केवल बढ़ती मछली पकड़ में ही नहीं, बल्कि मजबूत पारिवारिक अर्थव्यवस्था, नए संसाधनों एवं बेहतर भविष्य की उम्मीदों में भी परिलक्षित हो रहा है।

सिफरी एवं वर्ल्डफिश सहयोगी कार्यक्रम (Window-3) के अंतर्गत बालासोर जिले के रिशिया जलाशय में एक हितधारक बैठक एवं जागरूकता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पिछले दो वर्षों में लागू किए गए वैज्ञानिक मत्स्य हस्तक्षेपों के प्रभाव का मूल्यांकन करना था।

वैज्ञानिकों एवं परियोजना कर्मियों के साथ संवाद के दौरान एक आदिवासी मछुआरे श्री गणेश्वर नायक ने अपने जीवन में आए परिवर्तन की भावनात्मक कहानी साझा की। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत बेहतर मत्स्य उत्पादन एवं बाजार से बेहतर मूल्य प्राप्त होने के कारण पहली बार उनके परिवार की आय अभूतपूर्व स्तर तक पहुँची है। इसी बड़ी हुई आय से उन्होंने हाल ही में अपने परिवार के लिए एक मोटरसाइकिल खरीदी, जिसे वे पहले कभी अपनी पहुँच से बाहर मानते थे। उनके लिए यह मोटरसाइकिल केवल एक वाहन नहीं, बल्कि सम्मान, गतिशीलता एवं बेहतर भविष्य का प्रतीक बन गई है।



सिफरी एवं वर्ल्डफिश टीम द्वारा किए गए फील्ड मूल्यांकन में यह सामने आया कि ऐसी कहानियाँ अब अपवाद नहीं रहीं, कार्यक्रम में शामिल मछुआरों की पारिवारिक आय



वर्तमान वर्ष में हस्तक्षेप-पूर्व अवधि की तुलना में लगभग 43 से 59 प्रतिशत तक बढ़ी है।

इन उत्साहजनक परिणामों की सराहना करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रदीप डे ने डॉ. आर. के. मान्ना एवं संपूर्ण परियोजना दल को आर्थिक रूप से कमजोर मछुआरा समुदायों की आजीविका सुरक्षा में सुधार हेतु उनके समर्पित प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने डॉ. पडियार के सतत मार्गदर्शन एवं क्षेत्रीय सहयोग की भी प्रशंसा की, जिनका योगदान परियोजना के सफल क्रियान्वयन में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

डॉ. डे ने कहा कि इस प्रकार के विज्ञान-आधारित एवं समुदाय-केंद्रित मत्स्य हस्तक्षेप दूरदराज क्षेत्रों में सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास, आजीविका संवर्धन एवं आदिवासी सशक्तिकरण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि यह पहल समावेशी विकास, ग्रामीण समृद्धि एवं संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देकर विकसित भारत @2047 की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही, यह अंतर्स्थलीय मत्स्य-आधारित आजीविका अवसरों के माध्यम से ब्लू इकोनॉमी को भी सुदृढ़ कर रही है। उन्होंने कमजोर मछुआरा समुदायों की

आजीविका सुरक्षा बढ़ाने के लिए साक्ष्य-आधारित नीतियों, संस्थागत समन्वय तथा समुदाय-आधारित मत्स्य मॉडलों के विस्तार की आवश्यकता पर भी बल दिया।

कार्यक्रम की सफलता वैज्ञानिक मत्स्य बीज संवर्धन, समुदाय-आधारित मत्स्य प्रबंधन, जागरूकता निर्माण तथा सतत मत्स्य पालन पद्धतियों के प्रसार जैसे विज्ञान-आधारित हस्तक्षेपों पर आधारित है। उत्साहजनक रूप से, जलाशय क्षेत्र के समुदाय अब इको-टूरिज्म एवं जलाशय-आधारित पर्यटन गतिविधियों की संभावनाओं को भी तलाश रहे हैं, जिससे स्थानीय परिवारों के लिए अतिरिक्त मौसमी आय के नए स्रोत विकसित हो रहे हैं।

सिफरी के वैज्ञानिकों ने तकनीकी चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह अनुभव भावी अनुसंधानों, विशेष रूप से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी को तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की गतिशीलता और जलवायु परिवर्तन से जोड़ने वाले क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस भागीदारी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत किया है, देश भर में मत्स्य-निर्भर समुदायों की संधारणीयता और लचीलेपन को बढ़ाने के राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में कार्य करेगा।



अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस 2026 के अवसर पर संस्थान द्वारा निचली गंगा के दासपाड़ा घाट पर नदी रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस 2026 के अवसर पर सिफरी, बैरकपुर द्वारा राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) चरण-III



परियोजना के अंतर्गत 21 मई 2026 को निचली गंगा के दासपाड़ा घाट पर एक नदी रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस पहल का उद्देश्य देशी मत्स्य जैव विविधता के संरक्षण को बढ़ावा देना, मत्स्य भंडार पुनर्भरण को सुदृढ़ करना तथा गंगा पारिस्थितिकी तंत्र में सतत नदीय मत्स्य पालन को समर्थन प्रदान करना था। यह नदी रैंचिंग कार्यक्रम NMCG (चरण-III) परियोजना के परियोजना समन्वयक डॉ. एस. के. मात्रा के नेतृत्व में ICAR-संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रदीप डे की

गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में NMCG परियोजना के सभी सह-प्रधान अन्वेषक, विभागाध्यक्ष, केंद्र प्रभारी, वैज्ञानिक, तकनीकी कर्मी, परियोजना शोधार्थी, प्रशासनिक कर्मचारी एवं फील्ड कार्यकर्ताओं ने सक्रिय सहभागिता की। रैंचिंग गतिविधि के अंतर्गत लगभग 250 किलोग्राम इन्डियन मेजर कार्प (Indian Major Carp-IMC) प्रजातियों के अंगुलिकाओं, जिनमें रोहू, कतला, मृगल एवं बटा शामिल थे, को निचली गंगा में छोड़ा गया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 35,000 को नदी में प्रवाहित किया



गया, जिसका उद्देश्य घटती मत्स्य आबादी को पुनर्स्थापित करना तथा नदी पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता को सुदृढ़ करना था।

इस कार्यक्रम ने वैज्ञानिक स्टॉक संवर्धन कार्यक्रमों के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण के महत्व को बताया गया तथा NMCG पहल के अंतर्गत गंगा नदी पारिस्थितिकी तंत्र के पुनर्स्थापन एवं सतत प्रबंधन के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

मत्स्य संरक्षण हेतु ICAR-CIFRI द्वारा गंगा नदी में तीस हजार मत्स्य बीजों का संवर्धन



गंगा नदी में मत्स्य जैव विविधता संरक्षण एवं मत्स्य संसाधनों के पुनर्स्थापन के उद्देश्य से सिफरी के प्रयागराज केंद्र द्वारा 30 अप्रैल 2026 को प्रयागराज के संगम नोज क्षेत्र में लगभग 30,000 इंडियन मेजर कार्प (Indian Major Carp) प्रजातियों—कतला, रोहू एवं मृगल—के अंगुलिका गंगा नदी में छोड़े गए। इस अवसर पर 10-20 ग्राम भार वाले कुल 455 किलोग्राम मत्स्य बीजों का संवर्धन किया गया। यह कार्यक्रम NASI, प्रयागराज के कार्यकारी सचिव डॉ. संतोष कुमार शुक्ल की उपस्थिति में आयोजित हुआ।



कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश मत्स्य विभाग के अधिकारी, गंगा टास्क फोर्स, गंगा प्रहरी, गंगा विचार मंच, तीर्थयात्री, आसपास के गांवों के मछुआरे, मछली व्यापारी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लोगों ने सक्रिय भागीदारी की।

रैंचिंग स्थल पर राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) चरण-III परियोजना के अंतर्गत एक जन-जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. धर्म नाथ झा ने उपस्थित लोगों को गंगा नदी एवं



नमामि गंगे कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। संस्थान के प्रयागराज केंद्र के प्रभारी डॉ. बी. आर. चव्हाण ने आजीविका एवं पोषण सुरक्षा में मत्स्य क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि डॉ. संतोष कुमार शुक्ल ने अपने संबोधन में मानव सभ्यता के लिए गंगा नदी के महत्व को स्पष्ट करते हुए इसे स्वच्छ बनाए रखने का आह्वान किया। गंगा विचार मंच एवं राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के संयोजक, श्री राजेश शर्मा ने सभी उपस्थित लोगों को गंगा को स्वच्छ रखने की शपथ दिलाई।



संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों, डॉ. अबसार आलम, डॉ. वेंकटेश आर. ठाकुर, डॉ. विकास कुमार एवं डॉ. जितेन्द्र कुमार थे, ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वेंकटेश आर. ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए परियोजना के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने का विश्वास व्यक्त किया।

कार्यक्रम में संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों ने भी भाग लिया तथा उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया।

भारत के मीठे जल पारिस्थितिक तंत्रों के लिए खतरा बन रही परभक्षी विदेशी मछलियों के विरुद्ध त्वरित राष्ट्रीय कार्रवाई का आह्वान



भारत की मीठे जल जैव विविधता, मत्स्य संसाधनों एवं आजीविका पर परभक्षी विदेशी मछलियों से उत्पन्न खतरे को ध्यान में रखते हुए सिफरी, बैरकपुर द्वारा “मीठे जल पारिस्थितिक तंत्रों में आक्रामक विदेशी मछलियाँ : वर्तमान स्थिति, ज्ञान अंतराल एवं भावी अनुसंधान प्राथमिकताएँ” विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में नाइल तिलापिया, कॉमन कार्प, सकरमाउथ आर्मर्ड कैटफिश एवं अफ्रीकन कैटफिश जैसी आक्रामक मछली प्रजातियों के प्रसार से उत्पन्न पारिस्थितिक



एवं आर्थिक चुनौतियों पर गंभीर चर्चा की गई। ये प्रजातियाँ देश के अनेक अंतर्स्थलीय जलाशयों में स्थापित होकर जैव विविधता ह्रास, आवासीय क्षति, पारिस्थितिक असंतुलन तथा मत्स्य-आधारित आजीविका पर खतरा उत्पन्न कर रही हैं।

कार्यशाला का उद्घाटन पश्चिम बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ एनिमल एंड फिशरी साइंसेज (WBUAFS), कोलकाता के कुलपति डॉ. टी. के. दत्ता ने



किया। उन्होंने भारत की देशी जलीय जैव विविधता की सुरक्षा हेतु संस्थागत सहयोग, वैज्ञानिक नवाचार एवं साक्ष्य-आधारित नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर बल दिया।

संस्थान के निदेशक एवं कार्यशाला के संयोजक डॉ. प्रदीप डे ने भारत के मीठे जल पारिस्थितिक तंत्रों पर बढ़ते आक्रामक विदेशी मछलियों के खतरे से निपटने के लिए त्वरित राष्ट्रीय कार्रवाई का आह्वान किया। उन्होंने निगरानी प्रणाली, पारिस्थितिक जोखिम मूल्यांकन, साक्ष्य-आधारित नीतियों, संस्थागत समन्वय तथा प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों को समाहित करते हुए एक समन्वित राष्ट्रीय ढांचे की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विज्ञान-आधारित एवं समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण जैव विविधता संरक्षण, सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास एवं आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, जो विकसित भारत @2047 तथा सुदृढ़ ब्लू इकोनॉमी की अवधारणा के अनुरूप है।

कार्यशाला में देशभर के परिषद के अधीनस्थ संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं संबद्ध संगठनों से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं एवं पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग लिया। तकनीकी सत्रों में आक्रामक मछलियों के प्रसार एवं प्रवेश मार्ग, जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी पर प्रभाव, जलवायु परिवर्तन से अंतःक्रिया, खाद्य श्रृंखला परिवर्तन, पारिस्थितिक क्षरण, आर्थिक प्रभाव एवं रोकथाम तथा प्रबंधन संबंधी नीतिगत प्राथमिकताओं पर व्यापक चर्चा हुई।

सीफा के रहड़ा केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस. अधिकारी एवं डॉ. आर. एन. मंडल ने जलीय कृषि जैव-सुरक्षा, क्वार्टेन प्रोटोकॉल, जोखिम मूल्यांकन एवं उत्तरदायी जलीय कृषि पद्धतियों पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों में विदेशी प्रजातियों के आकस्मिक प्रवेश एवं प्रसार को रोकने हेतु मजबूत नियामक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर बल दिया।

सिफरी के विभिन्न प्रभागाध्यक्षों ने भी अनुसंधान एवं नीतिगत प्राथमिकताओं को रेखांकित किया। डॉ. संजीव कुमार मात्रा ने आक्रामक मछलियों के वितरण पर राष्ट्रीय डेटाबेस एवं दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी की आवश्यकता बताई। डॉ. रंजन कुमार मात्रा ने खाद्य श्रृंखला गतिशीलता एवं पारिस्थितिक प्रभावों के अध्ययन पर बल दिया। डॉ. असित कुमार बेरा ने प्रारंभिक पहचान के लिए आणविक निदान एवं eDNA आधारित निगरानी प्रणाली की संभावनाओं पर चर्चा की। डॉ. अरमान उल्लाह मुज्जददी ने मत्स्य-आधारित समुदायों पर सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जबकि डॉ. श्रीकांत सामंत ने मजबूत जैव-



सुरक्षा ढांचों, नीतिगत सहयोग एवं विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता बताई।

कार्यशाला में भारत में आक्रामक विदेशी मछलियों के मूल्यांकन, निगरानी एवं प्रबंधन हेतु एक रणनीतिक राष्ट्रीय

रोडमैप को तैयार किया गया। प्रमुख सुझावों में देशव्यापी निगरानी प्रणाली की स्थापना, संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों का पूर्वानुमान मॉडलिंग, मानकीकृत पारिस्थितिक एवं सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन प्रोटोकॉल, केंद्रीकृत राष्ट्रीय डेटाबेस का निर्माण, क्वारंटीन एवं जैव-सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ करना तथा हितधारकों के लिए व्यापक जागरूकता एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम शामिल थे।

कार्यशाला का समापन भारत के मीठा जल पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा तथा मत्स्य-आधारित आजीविका की स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु समन्वित वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों एवं सहयोगात्मक नीतिगत कार्रवाई के सशक्त आह्वान के साथ हुआ।

राष्ट्रीय वेबिनार के माध्यम से महाराष्ट्र में पिंजरो में मत्स्य पालन को बढ़ावा

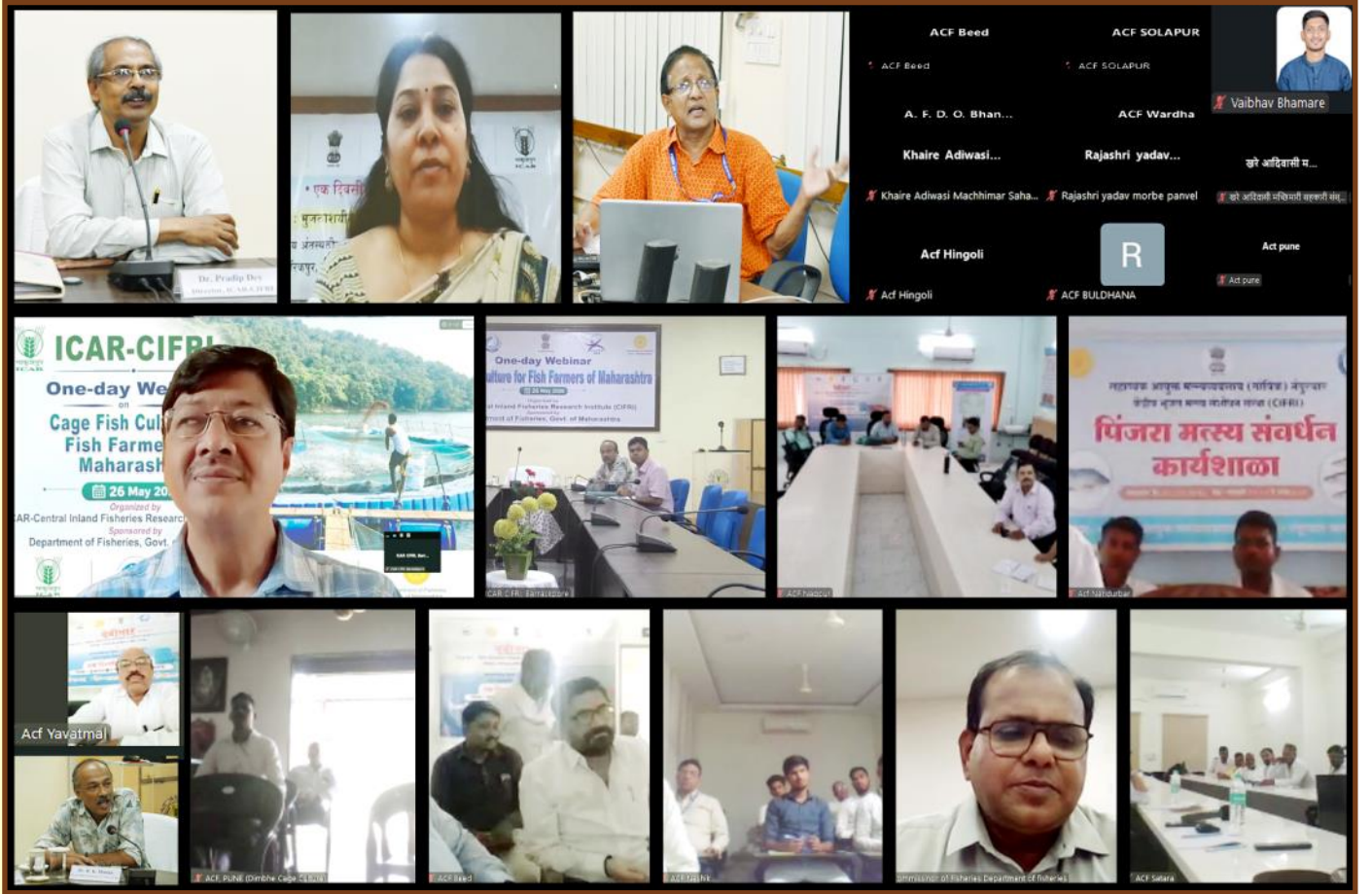
सतत जलाशय मत्स्य विकास को गति देने की दिशा में सिफरी मुख्यालय में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए ICAR-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने महाराष्ट्र सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से “महाराष्ट्र के मत्स्य किसानों के लिए पिंजरो में मत्स्य पालन” विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

इस वेबिनार में महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से 125 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें मछुआरे, सहायक मत्स्य आयुक्त तथा मत्स्य विभाग के अधिकारी शामिल थे। कार्यक्रम ने वैज्ञानिक केज जलीय कृषि के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाया, जिसे मत्स्य उत्पादन, ग्रामीण आजीविका एवं पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जा रहा है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने महाराष्ट्र के मछुआरों से राज्य के मध्यम एवं बड़े जलाशयों में पिंजरो में मछली पालन की विशाल संभावनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के समृद्ध अंतर्स्थलीय जल संसाधन वैज्ञानिक रूप से प्रबंधित केज जलीय कृषि के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं, जो जलाशय मत्स्य पालन एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का आर्थिक रूप से लाभकारी एवं पर्यावरण-अनुकूल समाधान प्रदान करते हैं।

डॉ. डे ने प्रतिभागियों से जलाशयों, नदियों एवं आर्द्रभूमियों के कैचमेंट क्षेत्रों में “संतुलित उर्वरक उपयोग अभियान” के जनदूत के रूप में कार्य करने का भी आग्रह किया, ताकि पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने, मृदा एवं जल स्वास्थ्य सुधारने तथा मत्स्य उत्पादकता की सतत वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

उन्होंने कहा, “केज कल्चर तकनीक अंतर्स्थलीय खुले जल क्षेत्रों में मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित, आर्थिक रूप से व्यवहार्य तथा पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ तकनीक के रूप में उभरी है। ब्लू रिवोल्यूशन, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा



योजना (PMMSY) तथा सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास की राष्ट्रीय अवधारणा के अनुरूप महाराष्ट्र के विशाल जलाशय संसाधन के जलीय कृषि के विस्तार के लिए अत्यधिक संभावनाशील हैं, जो मत्स्य उत्पादन, आजीविका सुरक्षा, पोषण परिणाम एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं।”

महाराष्ट्र की मत्स्य आयुक्त श्रीमती प्रेरणा देशभरतार, IAS ने देशभर में किसान-केंद्रित मत्स्य तकनीकों के प्रसार में संस्थान की अग्रणी भूमिका की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार के विज्ञान-आधारित सहयोग महाराष्ट्र में समावेशी एवं सतत जलाशय मत्स्य विकास को नई दिशा देंगे।

कार्यक्रम में श्री युवराज चौगले के मार्गदर्शन में राज्यभर के मत्स्य अधिकारियों एवं मछुआरों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई। उन्होंने प्रतिभागियों को तकनीकी सत्रों एवं विशेषज्ञों के साथ संवाद का लाभ उठाकर क्षेत्रीय स्तर पर तकनीक को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

तकनीकी चर्चा में पिंजरा में मत्स्य पालन के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे अंतर्स्थलीय पिंजरो की स्थापना, प्रजाति चयन, आहार एवं जलाशय प्रबंधन, आर्थिक व्यवहार्यता तथा सततता पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों की व्यावहारिक समस्याओं एवं क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत किया। डॉ. ए. के. दास ने खुले जल क्षेत्रों में पिंजरा पालन की संभावनाओं एवं उपयोगिता पर प्रस्तुति दी, जबकि डॉ. अरमान मुजद्ददी ने केज जलीय कृषि के वैज्ञानिक, परिचालन, आर्थिक एवं सततता संबंधी पहलुओं पर व्यापक जानकारी साझा की।

महाराष्ट्र में लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर जलाशय क्षेत्र उपलब्ध है, जिसमें लगभग आधा हिस्सा मध्यम एवं बड़े जलाशयों का है। यह स्थिति राज्य को केज जलीय कृषि विस्तार के लिए अत्यंत संभावनाशील बनाती है। आयोजकों ने स्थानीय मछुआरों तक तकनीक की पहुँच बढ़ाने हेतु पिंजरा पालन पुस्तिकाओं का मराठी भाषा में अनुवाद कराने की भी घोषणा की।

वेबिनार का समापन अनुसंधान संस्थानों एवं राज्य मत्स्य एजेंसियों के बीच सतत सहयोग एवं समन्वय की आवश्यकता पर बल देते हुए हुआ, ताकि जलाशय मत्स्य संसाधनों की अप्रयुक्त क्षमता का उपयोग कर आजीविका सुदृढ़ीकरण, पोषण एवं खाद्य सुरक्षा तथा महाराष्ट्र में सतत ब्लू इकोनॉमी विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

पश्चिम बंगाल में सामुदायिक भागीदारी आधारित रिवर रैंचिंग अभियान को दी नई गति



नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा नदी के पारिस्थितिक पुनर्जीवन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करते हुए सिफरी ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बलागढ़-सोमरा बाजार क्षेत्र में राष्ट्रीय रिवर रैंचिंग कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य घटते मत्स्य भंडार की पुनर्पूर्ति, देशी मत्स्य जैव विविधता का संरक्षण तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से नदी पारिस्थितिकी तंत्र को सशक्त बनाना था।

यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे तथा NMCG (चरण-III) परियोजना के परियोजना समन्वयक डॉ. एस. के. मन्ना की उपस्थिति में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की फील्ड गतिविधियों का समन्वयन डॉ. डी. भक्ता, डॉ. सुमन कुमारी एवं सुश्री टी. एन. चानू द्वारा परियोजना के कर्मचारियों एवं शोधार्थियों के सहयोग से किया गया।

सामुदायिक संरक्षण की सशक्त मिसाल प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों से 35 से अधिक स्थानीय मछुआरों ने सक्रिय भागीदारी की, जिनमें महिलाओं की उल्लेखनीय सहभागिता रही। इस अवसर पर लगभग 203 किलोग्राम भार वाले 33,500 हैचरी-उत्पादित मत्स्य अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया। इनमें इन्डियन मेजर कार्प प्रजातियाँ—रोहू, कतला एवं मृगल—के साथ बाटा मछली भी शामिल थी। इस रैंचिंग पहल का उद्देश्य देशी मत्स्य प्रजातियों की पुनर्स्थापना एवं जलीय जैव विविधता को सुदृढ़ करना था।

यह पहल राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के अंतर्गत सिफरी द्वारा संचालित व्यापक नदी पुनर्स्थापन कार्यक्रमों का हिस्सा है। संस्थान अब तक विभिन्न भारतीय राज्यों में एक करोड़ से अधिक मत्स्य अंगुलिकाओं का संवर्धन कर चुका है, जिससे नदी पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्बहाली में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।

स्थानीय समुदाय को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने गंगा पुनर्जीवन में सामुदायिक संरक्षण, सतत मत्स्य पालन एवं प्लास्टिक प्रदूषण नियंत्रण के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि देशी मत्स्य प्रजातियों की पुनर्स्थापना एवं जलीय जैव विविधता का संरक्षण ब्लू इकोनॉमी को सुदृढ़ करने, आजीविका संवर्धन एवं पारिस्थितिक सहनशीलता बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। डॉ. डे ने यह भी कहा कि वैज्ञानिक सहयोग, जनभागीदारी एवं संस्थागत समन्वय के माध्यम से ही गंगा नदी के



भविष्य को सुरक्षित किया जा सकता है तथा समावेशी एवं सतत नदीय विकास के माध्यम से विकसित भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

स्थानीय मछुआरा समुदायों ने कार्यक्रम के प्रति उत्साहपूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए मत्स्य उपलब्धता में सुधार, आजीविका सुदृढीकरण तथा गंगा की समृद्ध देशी मत्स्य विरासत के संरक्षण हेतु ICAR-CIFRI के निरंतर प्रयासों की सराहना की।

यह कार्यक्रम भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के तत्वावधान में संचालित किया गया।



स्वस्थ मृदा, स्वस्थ जल, सतत मत्स्य पालन के लिये सिफरी द्वारा संतुलित उर्वरक उपयोग अभियान का नेतृत्व



एक अनूठी जन-जागरूकता पहल के अंतर्गत सिफरी ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बालागढ़ ब्लॉक के मत्स्य किसानों के लिए “मेरा गांव मेरा गौरव” कार्यक्रम के तहत नाव पर आयोजित एक विशेष जागरूकता अभियान संचालित किया। “सतत मत्स्य पालन हेतु मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन एवं संतुलित उर्वरक उपयोग को बढ़ावा” विषय पर आधारित इस अभियान ने मृदा स्वास्थ्य, पोषक तत्व प्रबंधन एवं सतत जलीय कृषि के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को रेखांकित किया।

यह देखते हुए कि अनेक मछुआरे खेती से भी जुड़े हुए हैं, कार्यक्रम का उद्देश्य जलीय कृषि प्रणालियों में उर्वरकों के वैज्ञानिक एवं

विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना था, ताकि उत्पादकता में वृद्धि, पारिस्थितिक संतुलन का संरक्षण तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित की जा सके। नाव-आधारित इस अभिनव कार्यक्रम ने मछुआरा समुदाय से उनके कार्यस्थल पर सीधे संवाद स्थापित करने का प्रभावी अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कृषि कैचमेंट क्षेत्रों में असंतुलित



उर्वरक उपयोग के दुष्प्रभावों के प्रति आगाह किया। उन्होंने कहा कि इससे मृदा क्षरण एवं पोषक तत्वों का बहाव बढ़ता है, जो जलीय पारिस्थितिक तंत्रों एवं मछलियों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता है। उन्होंने मृदा एवं जल परीक्षण आधारित उर्वरक के साथ साथ किसानों से जैव उर्वरकों, जैविक इनपुट एवं सटीक पोषक तत्व प्रबंधन आधारित एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियाँ



अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि संतुलित उर्वरीकरण केवल उच्च मत्स्य उत्पादकता के लिए ही नहीं, बल्कि जल गुणवत्ता एवं पारिस्थितिक सहनशीलता बनाए रखने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

नदीय प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस. के. मान्ना ने मृदा स्वास्थ्य एवं जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया और सतत मत्स्य विकास में उनकी भूमिका को स्पष्ट किया।

विशेषज्ञ वैज्ञानिकों की टीम द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया। तकनीकी सत्रों के दौरान वैज्ञानिकों ने बताया कि कृषि में रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग अक्सर विषैले बहाव का कारण बनता है, जो तालाबों एवं आर्द्रभूमि में पहुँचकर जलीय जैव विविधता तथा मछलियों के अस्तित्व को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। प्रतिभागियों को आवश्यकता-आधारित उर्वरक उपयोग, तालाब तलछट की नियमित मृदा जांच तथा संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियों के प्रति जागरूक किया गया, ताकि पर्यावरणीय गुणवत्ता से समझौता किए बिना जलीय कृषि उत्पादकता बढ़ाई जा सके।

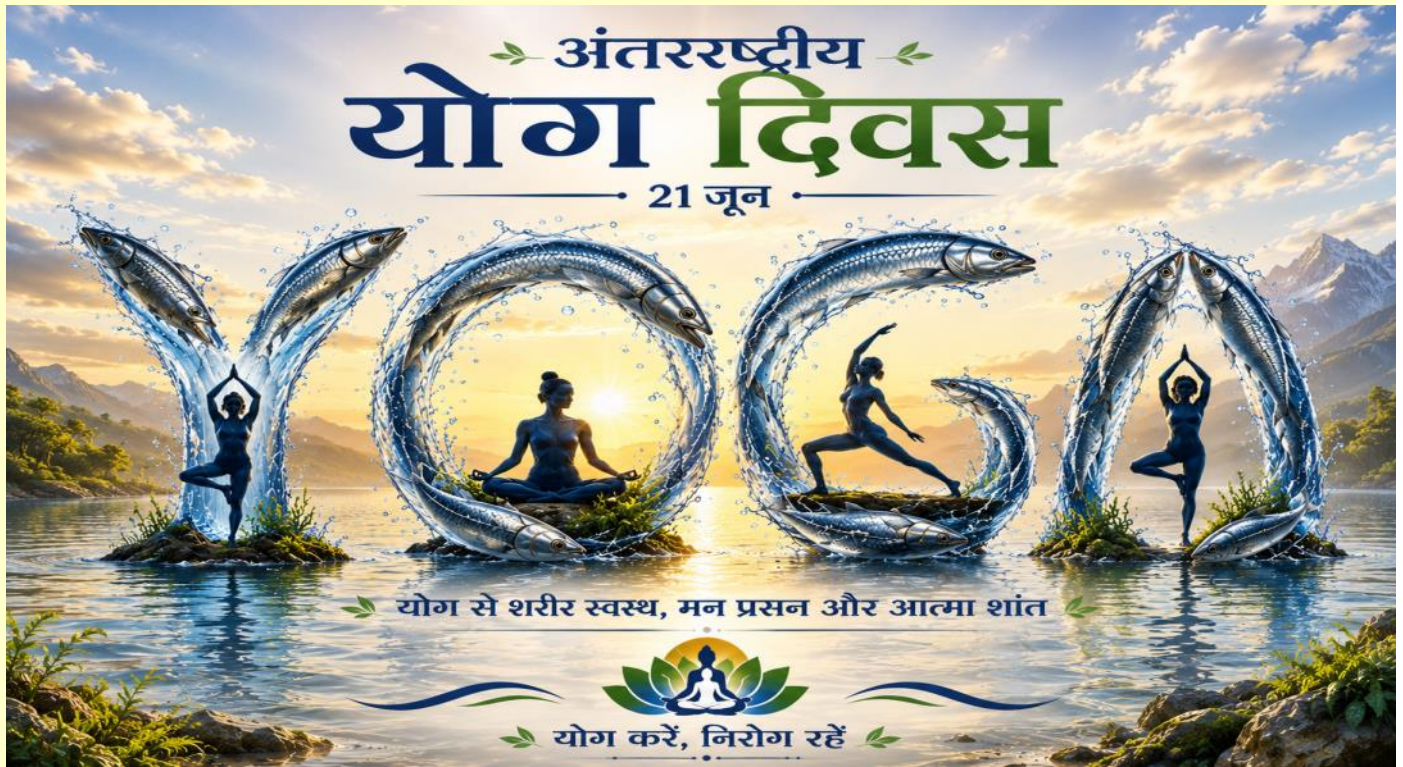
इस अभियान का समन्वयन डॉ. डी. भक्त, डॉ. सुमन कुमारी एवं सुश्री टी. एन. चानू द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में कुल 35 मत्स्य किसानों ने सक्रिय भागीदारी की, जिनमें 25 महिला प्रतिभागी शामिल थीं। यह मत्स्य-आधारित आजीविका में महिलाओं की बढ़ती भूमिका एवं समुदाय की मजबूत सहभागिता को दर्शाता है।

पश्चिम बंगाल में मत्स्य क्षेत्र ग्रामीण आजीविका का एक महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे में यह पहल संतुलित उर्वरक उपयोग, पर्यावरणीय जोखिमों में कमी, तालाब उत्पादकता में वृद्धि तथा जलवायु-सहिष्णु जलीय कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। साथ ही, यह आजीविका सुरक्षा एवं पारिस्थितिक स्थिरता को भी सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी।

मत्स्य विज्ञान और योग : स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर और सतत भविष्य की ओर

हर वर्ष 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2014 में भारत के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने योग के वैश्विक



महत्व को स्वीकार करते हुए 21 जून को “अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस” घोषित किया। तब से योग केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए स्वास्थ्य, संतुलन और मानसिक शांति का प्रतीक बन चुका है।

मत्स्य वैज्ञानिकों, मत्स्य विद्यार्थियों तथा मत्स्य व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए योग का महत्व और भी अधिक है। मत्स्य क्षेत्र में कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को लंबे समय तक फील्ड सर्वेक्षण, जलाशयों एवं नदियों में कार्य, अनुसंधान सम्बन्धी दबाव तथा अनियमित दिनचर्या का सामना करना पड़ता है। वहीं मछुआरे और मत्स्य किसान कठिन शारीरिक श्रम, मौसम की अनिश्चितता और आर्थिक चुनौतियों से जूझते हैं। ऐसी परिस्थितियों में योग शारीरिक क्षमता, मानसिक एकाग्रता और सकारात्मक सोच बनाए रखने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने की एक सशक्त जीवनशैली है। प्राणायाम, ध्यान और विभिन्न योगासन तनाव कम करने, रक्त संचार सुधारने, कार्यक्षमता बढ़ाने तथा मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक हैं। नियमित योग से कार्य के प्रति एकाग्रता बढ़ती है, निर्णय क्षमता मजबूत होती है तथा शारीरिक थकान कम होती है।

मत्स्य क्षेत्र आज “नील क्रांति” और सतत विकास का महत्वपूर्ण आधार बन रहा है। जिस प्रकार स्वस्थ जल और स्वस्थ पारिस्थितिकी सतत मत्स्य उत्पादन के लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार स्वस्थ शरीर और संतुलित मन वैज्ञानिक सोच एवं उत्पादक कार्य वातावरण के लिए जरूरी हैं। योग हमें संतुलन, अनुशासन और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का संदेश देता है, जो सतत मत्स्य प्रबंधन के मूल सिद्धांतों से भी जुड़ा हुआ है।

आज इसकी नितांत आवश्यकता है कि मत्स्य अनुसंधान संस्थानों, महाविद्यालयों तथा मछुआरा समुदायों में योग को नियमित जीवनशैली का हिस्सा बनाया जाए। इससे न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि कार्यक्षमता, सामुदायिक सहयोग और सकारात्मक वातावरण को भी बढ़ावा मिलेगा।

विश्व योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

योग अपनाएँ — स्वस्थ शरीर, शांत मन और सतत भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ।

संपादन मण्डल



वैज्ञानिक मत्स्य पालन कार से मछुआरों को नयी उर्म्म

कोलकाता/संवाददाता

ओडिशा के बालासोर जिले में ऋषिया जलाशय के आसपास रहने वाले आदिवासी मछुआरों की कई पीढ़ियों के लिए, मछली पकड़ना एक ऐसा पेशा था जिसमें पैदावार अनिश्चित होती थी और आमदनी बहुत कम। आज, यहाँ एक बदलाव देखने को मिल रहा है, जो न केवल मछली की बड़ी हुई पैदावार में, बल्कि परिवारों की मजबूत होती आर्थिक स्थिति, नयी संपत्ति और भविष्य के लिए नयी उम्मीदों में भी साफ झलक रहा है।



रिश्ति। बहुरंगीय। जलवायु। मत्स्य। पालन। कार। से। मछुआरों। को। नयी। उर्म्म। कोलकाता। संवाददाता। ओडिशा के बालासोर जिले में ऋषिया जलाशय के आसपास रहने वाले आदिवासी मछुआरों की कई पीढ़ियों के लिए, मछली पकड़ना एक ऐसा पेशा था जिसमें पैदावार अनिश्चित होती थी और आमदनी बहुत कम। आज, यहाँ एक बदलाव देखने को मिल रहा है, जो न केवल मछली की बड़ी हुई पैदावार में, बल्कि परिवारों की मजबूत होती आर्थिक स्थिति, नयी संपत्ति और भविष्य के लिए नयी उम्मीदों में भी साफ झलक रहा है।



Anwar Hussain 24 May, 2026

शुक्रान THE SAKALA

Balalore - 23 May 2026 - Page 4

आरो था वर

26 जून 2026 शनिवार 30 MAY 2026 SATURDAY

Advertisement for 'Ei Samay' (এই সময়) with various service icons and contact information.

এই সময়: গঙ্গার জীববৈচিত্র্য রক্ষা ও দেশীয় মাছের সংখ্যা বৃদ্ধির লক্ষ্যে নদীয়ার কর্মসূচি

May 26, 2026



Healthy Soil, Healthy Waters, Sustainable Fisheries: ICAR-CIFRI Leads Balanced Use of Fertiliser Campaign

May 2026 : In a unique outreach initiative conducted aboard a boat, the ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI) organized an Awareness Campaign on Balanced Use of Fertilisers for fish farmers of Balagarh block, Hooghly district, West Bengal, under the MeraGaonMeraGaurav programme on 26 May, 2026. The campaign, themed "Promoting Soil Health Management and Balanced Fertiliser Use for Sustainable Fishery", highlighted the critical linkages between soil health, nutrient management, and sustainable aquaculture.

কেন্দ্রীয় (ICAR-জিত এই না গঙ্গায় পাশাপাশি ঙ্গ ছিল। য় সঞ্চার রিবেশের দ্বার এবং গুরুত্বপূর্ণ স্থানীয়

গঙ্গায় মৎস্যের বিবিধতা রক্ষায় সিফির উদ্যোগ

আরো খবর প্রতিবেদন: নমামি গঙ্গে প্রকল্পের অধীনে পরিবেশ পুনরুদ্ধার ও সুস্থিত মৎস্য ব্যবস্থাপনার ক্ষেত্রে এক গুরুত্বপূর্ণ পদক্ষেপ হিসেবে ভারতীয় কৃষি অনুসন্ধান পরিষদের আন্তর্গত কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা প্রতিষ্ঠান নদিয়া জেলায় নবদ্বীপের স্বরূপগঞ্জ ঘাটে গঙ্গা নদীতে একটি জাতীয় মৎস্যসঞ্চার কর্মসূচির আয়োজন করে। এই উদ্যোগের মূল লক্ষ্য ছিল গঙ্গা নদীতে বিলুপ্তপ্রায় মাছের মজুত পরিমাণের পুনরুদ্ধার, দেশীয় মাছের জীববৈচিত্র্য সংরক্ষণ এবং নদীর পরিবেশগত স্বাস্থ্যের উন্নয়ন। কর্মসূচিটি সিফি-এর নির্দেশক ড. প্রদীপ দে-র নেতৃত্বে এবং ন্যাশনাল মিশন ফর ক্রিন গঙ্গা বা 'নমামি গঙ্গে' প্রকল্পের প্রধান সমন্বয়ক ড. এস. কে. মামার নির্দেশনায় পরিচালিত হয়। অনুষ্ঠান চলাকালীন প্রায় 2৬৫ কেজি ওজনের মোট ৫০,০০০ মাছের পোনা গঙ্গা নদীতে ছাড়া হয়, যাতে মাছের মজুত বৃদ্ধি পায় এবং দেশীয় প্রজাতির মাছের প্রাকৃতিক প্রজনন শক্তিশালী হয় এই মৎস্যসঞ্চার কর্মসূচিতে ভারতীয় প্রধান কার্প প্রজাতি যেমন রুই, কাতলা ও মৃগেল-এর পাশাপাশি বাটা মাছও অন্তর্ভুক্ত ছিল, যেগুলি গঙ্গা অববাহিকার জলজ জীববৈচিত্র্য পুনরুদ্ধারে অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করে। এই উপলক্ষে ড. প্রদীপ দে বলেন, নদীতে মৎস্য সঞ্চার গঙ্গার দেশীয় মাছের বৈচিত্র্য পুনরুদ্ধার এবং নদীর পরিবেশগত স্বাস্থ্য উন্নয়নের জন্য একটি গুরুত্বপূর্ণ বৈজ্ঞানিক পদক্ষেপ। মৎস্য সংরক্ষণের ধারাবাহিক প্রচেষ্টা এবং জনগণের সক্রিয় অংশগ্রহণের মাধ্যমে আমরা ভবিষ্যৎ প্রজন্মের জন্য সুস্থায়ী মৎস্যসম্পদ ও সুরক্ষিত জীবিকা নিশ্চিত



করার লক্ষ্যে কাজ করছি। অন্যদিকে ড. এস. কে. মামা জানান, মৎস্যসঞ্চার কর্মসূচির ইতিবাচক প্রভাব ইতিমধ্যেই দৃশ্যমান হয়েছে। ১৯৫৯ সালের তুলনায় প্রায়গোড়াই ভারতীয় প্রধান কার্প মাছের আহরণ ২৪.৭ শতাংশ এবং বারাণসীতে ৪১ শতাংশ বৃদ্ধি পেয়েছে, যা এই স্টক বৃদ্ধিমূলক উদ্যোগের কার্যকারিতা প্রমাণ করে। বিশেষজ্ঞরা উল্লেখ করেন যে, নদীতে মৎস্যসঞ্চার বর্তমানে ক্রমছাটসমান মাছের সংখ্যা পুনরুদ্ধার করা, পরিবেশগত ভারসাম্য বজায় রাখা এবং নদীকেন্দ্রিক মৎস্যজীবী সম্প্রদায়ের জীবিকার উন্নয়নে একটি কার্যকর মৎস্য ব্যবস্থাপনা কৌশল হিসেবে প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। এই কর্মসূচি জাতীয় স্বচ্ছ গঙ্গা মিশন -এর অধীনে অহিসিএফআর-সিআইএফআরআই-এর

Advertisement for 'Prakashan Mandol' (প্রকাশনমন্ডল) with contact information and details about the publication.